Vol 3 Issue 8 Feb 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-8 | Feb-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

कथा साहित्य का परिवेश एवं समस्याएँ

सुनिता क्षीरसागर

असिस्टंट प्रोफेसर, एस. के. सोमया महाविद्यालय

Abstract:-मनुष्य बौद्धिक प्राणी है। अपनी इसी शक्ति के बल पर वह अपने आसपास के वातावरण को समझता और मूल्यांकित करता है। सामाजिक वातावरण के संपर्क से मनुष्य की नैतिकता, औचित्य और चिंतन का विकास होता है। साहित्यकार अन्य व्यक्तियों से अधिक संवेदनशील होता है। इसलिए वह युग दृष्टा और सृष्टा दोनों है। वह अपने समय, समाज, देश और समसामयिक परिस्थितियों के अनुरूप अपनी बौद्धिक सर्जनात्मक प्रतिभा से युगीन परिवेश को दृष्टि में रखकर उसके सत्-असत् रूप की समीक्षा करता है। अपने विशिष्ट उद्देश्य को सम्मुख रखकर अपनी कृतियों के माध्यम से वातावरण को सतत् निर्मित करने का प्रयास करता है। इस प्रक्रिया में वह कहीं प्राचीन मान्यताओं का विश्लेषण कर जड़ हो गई परंपराओं को परिसीमित करता है, तो कहीं वर्तमान के लिये आवश्यक नवीन जीवन-मूल्यों की हिमायत कर उनकी वांछनीयता और उपादेयता को स्थापित करता है। रचनाकार की अर्थमयी भावमग्न चेतना अपने शब्द संधान कौशल से अपने समय के सच्चे और सही स्वरूप को उद्घाटित करती है।

INTRODUCTION:

अलका सरावगी की जन्म-कर्मभूमि कोलकता महानगर है। इनके पूर्वज मरुभूमि छोड़ जीवन बसर करने कोलकता आए; इस मारवाड़ी जाति की जीवन कहानी लेखिका ने अपने पहले उपन्यास, 'कलि-कथा : वाया बाइपास' में प्रस्तुत की है। अलकाजी के संपूर्ण साहित्य में कोलकता महानगर की विस्तृत जानकारी मिलती है। जैसे, ''कोलकता कहते ही एक बिंब बनता है, जुलूसों के शहर का, इसके अलावा दिखाई देते हैं, 'विक्टोरिया मेमोरियल, काली-घाट मंदिर, रामकृष्ण परमहंस का दक्षिणेश्वर हावड़ा पुल और पुराना बड़ा बाजार। भकभक सफेद धोती-कुर्ता में अपनी उच्च संस्कृति के गर्वबोध से भरे बंगाली भद्रजन, कोलकता की पहचान के प्रधान अंग हैं। लाल झण्डे, दुर्गा पूजा, रसगुल्ला, सौरभ गांगुली और ट्रैफिक जाम। इन दिनों प्रश्न उठ रहा है कि नए-नए खुल रहे शॉपिंग मॉल, मल्टीप्लेक्स भव्य पाँच सितारा होटल, रेस्तरॉ की श्रृंखला, विदेशी ब्रांड के कपड़ों की बड़ी-बड़ी दुकानों की कतार और इन सभी के बीच से बढ़ता उपभोक्तावाद।''१

कोलकाता शहर में बहुत से लेखकों ने जन्म लिया। इस महानगर की पहचान कुछ लेखक-कवियों के साथ जुड़ी जैसे भारतेन्दु हरिश्चंद को बांग्ला नवजागरण ने प्रभावित किया था। रविन्द्रनाथ टैगोर जिनकी महत्त्वपूर्ण पहचान है शांति निकेतन, निराला से लेकर, महाश्वेता देवी तक इस तरह अनगिनत नाम है। आज आधुनिक लेखकों की गिनती खत्म ही नहीं होती। महिला लेखिकाओं में प्रभा खेतान से लेकर अलका सरावगी तक है। इन्होंने स्त्री लेखन की दुनिया में अपनी विस्मित करनेवाली पहचान बनाई है। देखा जाए तो कोलकता महानगर में एक साहित्यिक गाँव है। साहित्यिक हलचलों का दूसरा नाम कोलकता है। यह आज भी सांस्कृतिक विचित्रताओं से भरा महानगर है।

अलका सरावगी के साहित्यिक गतिविधियों को यथार्थ रूप में जानने के लिए उनके समय के बाह्य परिस्थितियों एवं उन्हीं के द्वारा लिखित उनके पूर्वजों के जीवन विषयक परिस्थितियों को देखना अनिवार्य बन जाता है। इस दृष्टि से पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतिक परिवेश इस प्रकार है।

पारिवारिक परिवेश :–

व्यक्ति के भीतर कुछ जन्मजात गुण होते हैं, इनके आधार से वह अपने परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। व्यक्ति के इन गुणों को उसका परिवेश परिमार्जित एवं संगठित करता है। जिससे व्यक्ति की आंतरिक एवं बाह्य शक्तियाँ विभिन्न रूपों में उजागर होती है। खासतौर पर एक रचनाकार के व्यक्तित्व पर परिवेश की छाप और भी गहरी होती है। लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं होता कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण पूर्ण रूप से परिवेश पर ही निर्भर होता है। कई बार समान परिवेश में पलने बढ़ने के बाद भी दो व्यक्तियों में नितान्त भिन्नता पाई जाती है। उदाहरण के लिए, ''एक हाथ की पाँच उँगलियाँ एक जैसी नहीं होती।'' व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में परिवेश के साथ-साथ उसकी सोच, मानसिकता, पुरुषार्थ और कर्म का 'पारिवारिक परिवेश' में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

परिवार के दो प्रकार हैं– संयुक्त और एकल (विभक्त) जो आधुनिकता का परिणाम है। सामाजिक संकल्पना में सिर्फ संयुक्त परिवार ही बनते थे। संयुक्त परिवार की विचारधारा ने लोगों को समीप लाने का प्रयत्न किया इसी से प्रभावित होकर मानव समुदाय अपनी अपनी विशिष्ट पारिवारिक सीमाओं में संयुक्त रूप से रहने लगे अर्थात् सामाजिक जीवन की पद्धति आर्थिक सुरक्षा, परस्पर सहयोग आदि रचनात्मक आधार थे, जिनके कारण संयुक्त परिवार का जन्म हुआ। प्राचीन युग में हिंदू समाज संगठन का एक आधार संयुक्त परिवार था। सामाजिक संस्थाओं का रूप तथा संगठन किसी देश की आर्थिक परिस्थितियों द्वारा निश्चित होता है। क्योंकि मुख्यत: नवीन आर्थिक सुविधाओं की दृष्टि से ही सामाजिक संस्थाएँ अपने नए रूप में संगठित हो जाती हैं। इन संस्थाओं के पुनर्निर्माण में केवल आर्थिक परिस्थितियाँ ही नहीं अपितु सांस्कृतिक रुचि में परिवर्तन होने पर भी सामाजिक संस्थाओं का पुनर्गठन होता है।

पारिवारिक परिवेश में सबसे बड़ा उदाहरण है उपन्यास 'कलि-कथा : वाया - बाइपास' इसके कथानक में लेखिका ने मध्यवर्गीय मारवाड़ी परिवार और उनकी पाँच पीढ़ियों की संघर्ष कथा प्रस्तुत की है। भिवानी (राजस्थान) से कोलकाता जानेवाले इस पाँच पीढ़ियों वाले परिवार का यह मार्ग इतिहास सम्मत भी है, जिसका प्रमाण आज का कोलकाता दे सकेगा। यह कथा वास्तव में एक पारिवारिक कथा है। इस कथा में मारवाड़ी समाज के कई अंतर्विरोधों को खुलकर प्रस्तुत किया है। मारवाड़ी समाज के लोग पैसों के लिए पागल हैं, अपनी निजी खुशियों और पारिवारिक संबंधों को अनदेखा करते हैं। कथा के प्रमुख पुरुष चरित्र किशोरबाबू अपने परदादा रामविलास को याद करते हैं, जो अंग्रेजों के सहयोग से (हेमिल्टन साहब) भिवानी छोड़कर कोलकाता आते हैं। एक सफल व्यापारी बनते हैं। इनका बेटा केदारबाबू उनकी (पिता) इस अंग्रेजी भक्ति को स्वीकार नहीं करता और विद्रोही तेवर अख्तियार करता है। किशोर अपने पिता (भूरामलजी) की मृत्यु के बाद कोलकता में अपनी विधवा माँ और भाभी के साथ रहते हुए अपने व्यापारी मामाओं के पास नौकरी करता है। लेकिन वर्तमान में किशोरबाबू को अपनी सत्तर वर्ष की आयु में पछतावा होता है कि 'वह न देश के काम आया और न परिवार के।'

उपन्यास कथा के शुरुआत में किशोरबाबू के परिवार में बूढ़ी माँ, भाभी, पत्नी, छोटी बेटी, बेटा-बहू, पोता है। दो बेटियों की शादी हुई है, बड़ी बेटी, बेटे के चाह में एक के बाद दूसरा-तीसरा गर्भपात कराकर और बहू पार्लर में सैकड़ों रुपये खर्च करके पारिवारिक परंपरा के प्रति विद्रोह करती है। इसी उपन्यास में एक और महत्त्वपूर्ण बात जिससे पारिवारिक इतिवृत्त नाटकीय बन जाता है; वह है किशोरबाबू का ऐतिहासिक सरोकार तथा मारवाड़ी समाज की अस्मिता का प्रश्न। इसलिए औपन्यासिक कथा को देश के ढाई सौ साल के इतिहास से जोड़ा है। एक मारवाड़ी हैसियत से वे देश की गुलामी के लिए अपने को जिम्मेदार मानते हैं; और किशोरबाबू अपने पोते का नाम अपने परदादा का नाम रखना चाहते हैं, 'रामविलास', लेकिन बेटा-बहू संपूर्ण परिवार उनका विरोध करता है। समझौते के लिए फिर मानकर 'विली' नाम स्वीकार लेते हैं, लेकिन किशोरबाबू को संतोष नहीं मिलता। इस प्रकार उपन्यास में पाँच पीढ़ियों का पुराना इतिहास संभालनेवाला मारवाड़ी परिवार इनके संपर्क में बंगाली, अंग्रेज, नर्सें, डॉक्टर, पंडित, ज्योतिषी, स्वतंत्रता सेनानी, पूँजीपति, सैनिक, प्रचारक आदि लोगों के परिवार आते हैं।

जिंदगी की सच्चाई को रचना के स्तर पर ग्रहण करने की ताकत और रचना की ईमानदारी को किसी भी मोड़ पर न खो देने की होशियारी अलका सरावगी में है। जो उनके उपन्यास, 'शेष कादंबरी' से ज्ञात होता है। कथा नायिका रूबी गुप्ता के दो माता-पिता थे, पहले जन्मदाता, दूसरे पालनेवाले। दो माता-पिताओं का राज रूबी को एक रात, उम्र के ग्यारहवें वर्ष में पता चलता है। रुबी दी उपन्यास कथा में दो परिवार परिवेश को पूर्व दीप्ति शैली (फ्लैशबैक) द्वारा व्यक्त करती है। जन्मदाता माता-पिता को रूबी मामा-मामी कहती है– इस परिवार में तीन बेटियाँ थीं और आर्थिक कठिनाई के कारण इन्होंने अपनी तीन बच्चियों में से एक बच्ची अपनी ही ननद को गोद दे दी वह थी 'रुबी'। गोद लेनेवाले माता-पिता का परिवार बहुत ही अमीर, सतपीढ़ियाँ का परिवार था।

रुबी गोद लिये माता-पिता के साथ खुश थी क्योंकि वह सत्तर वर्ष की आयु में बचपन के परिवार को याद करके खुश होती है, ''कैसा सुनहरा एक जीवन दिया पिताजी ने माँ और रुबी को, जितने दिन भी अच्छे थे, वे क्या कम थे ? छब्बीस दिसंबर को होनेवाले 'वायसराय कप' की रेस के दिन 'कुंक एंड केल्वी' की दुकान से नायाब घड़ियाँ और ओल्ड कोर्ट हाऊस स्ट्रीट पर 'हैमिल्टन से अद्‌भुततम' कारीगरी के गहने खरीदने के दिन। ऑक्शन में जाकर पृथ्वी पर बननेवाली एक से एक चीजें खरीदने के दिन, चौरंगी में 'फिरपो' रेस्तराँ में खाने के दिन। साड़ीवाला आता घर पर साड़ियाँ दे जाता। बूढ़ा उस्मान दर्जी दुनियाभर की कैसी भी डिजाइन की नकल कर एक से एक कपड़े रुबी के लिए बना देता। लेकिन इस सारी रईसी के बावजूद जीवन में एक सादगी भी थी, रोजमर्रा के जीवन में नियमित समय पर सादा खान-पान और साधारण सूती कपड़े और कभी भी बातों में रुपयों के बारे में कोई जिक्र नहीं।''[१]

रुबीदी एक परिवार, एकही परिवार का प्यार पाने के लिए बचपन से तड़पती रही। शादी के बाद भी उसे वह नसीब न हुआ, जेठानी की बदतमीजियाँ सहते रुबी को दो बच्चियाँ हुईं। जब सम्मिलित परिवार छोड़ अलग हो पाई तो पति गुजर गए। इसके बाद दो पुत्रियों का अपनी माँ रूबी से इस कदर कट जाना, उनकी परवाह न करना दो बेटियों में 'माँ' रूबी में वह, 'माँ-बेटी वाला प्यार कभी दिखा नहीं। रुबी दी ने वैधव्य निबाहा, बड़ी बेटी की बेटी, रुबी दी की नातिन, 'कादम्बरी' उनसे मेल-जोल रखती है। कादंबरी बिना शादी किए किसी युवक के साथ रहती है और रुबी दी पूछ तक नहीं पाती। बेटियों से भी कब पूछ पाई। वृद्धावस्था में इनको अपनी नए किराएदार प्रीति का सम्मिलित परिवार सुखद अजूबा लगा था, वे लोग मेघों के देश से आए थे। दादी-दादा, दो बेटे, बहुएँ, चार बच्चे। रुबी दी के घर के सन्नाटे को एकबारगी गायब करते एक साथ दस प्राणी जो धान खेती के हरेपन से रुबी दी के परिवार वाला सपना बनाने आए थे। इस परिवार ने रुबी दी को दो दिन में ही दादी माँ का सम्मान व हक अदा कर दिया था।

रुबी इस परिवार के बच्चों का साथ पाकर दिन-रात गद्‌गद हो जाती, एक दिन रुबी दी सो रही थी, उनके पास प्रीति का छोटा बेटा खेल रहा था जब रुबी दी ने आँखे खोली तो उनकी आँखे दो गोल काली चमकदार मुस्कुराती आँखों से जा मिली। उनके पास सोया हुआ बच्चा उन्हें देखकर हँस रहा था, रुबी दी विस्मित हो गई। इस वक्त रुबी दी के मन में जो सुंदर विचार आया उसका वर्णन लेखिका ने बहुत खूबसूरत शब्दों में किया, ''कैसी दिव्य अलौकिक अद्‌भुत आँखें हैं, 'रुबी दी को लगा कि अपनी नसों में प्रवाहित होते रक्त का अनहद नाद उन्हें सुनाई पड़ रहा है। वे उसे सुनती हुई मंत्रमुग्ध-सी उन आँखों में देखती रहीं। उन्हें वहाँ सारा ब्रह्माण्ड उसी तरह दिख रहा था जैसे कभी यशोदा को कृष्ण के मुँह में दिखा होगा।''[२] रुबी दी के चेहरे पर जो खुशी थी उसे देख, प्रीति कहती है, ''हम जब तक अपनों के अलावा किसी और से प्रेम नहीं करते, तब तक हम प्रेम का अर्थ नहीं जान सकते...।'' अपने पति और बच्चों से हम कर्तव्य से बंधे होते हैं, उनके लिए कुछ करके वह संतोष नहीं मिल सकता जो

सिर्फ नि:स्वार्थ प्रेम ही दे सकता है।''[२]

उपन्यास 'कोई बात नहीं' में संयुक्त परिवार है। कथा नायक शारीरिक रूप से अक्षम सत्रह वर्षीय एक ऐसे नवयुवक शशांक के यथार्थ जीवन को प्रकाश में लाया है, जो सामान्य बच्चों की तरह चल-बोल नहीं सकता। लेकिन बुद्धि में वह अन्य हमउम्र बच्चों की तुलना में काफी तेज है। उसके जीवन में हर कदम पर ठोकर है, बाधाएँ हैं, कठिन से कठिन चुनौतियाँ हैं। जीवन की सभी परिस्थितियाँ विपरीत हैं। अपने माँ-परिवार के साथ रहकर उनके प्राणों तक कोशिश के परिणाम स्वरूप सत्रह साल बाद वह थोड़ा बहुत सामान्य जीवन जीने की शुरुआत करता है।

अपने अक्षम बच्चे को सक्षम बनाना यह कठिन चुनौतियों का काम मि.चौधरी को आसान हो सका संयुक्त परिवार के कारण, साथ ही संयुक्त परिवार के सहयोग से ही मिसेज चौधरी अपनी बेटी अदिति के पैदा होने के बाद वकालत की शुरुआत करती हैं टॉप नंबर लाकर शहर की सबसे मशहूर बड़ी लॉ फर्म में प्रमुख वकील हैं।

शशांक अपने परिवार के सभी लोगों को बहुत प्यार करता है कारण वह बिना बोले महसूस करता है कि उसके लिए संपूर्ण परिवारवाले बच्चे तक कितने परेशान होते हैं वह खुश होता है तो छोटी सी जया के चेहरे में खिलखिलाहट होती है। 'उपन्यास संपूर्ण कथा में बेटा-माँ केंद्र में हैं, लेकिन यह दोनों हमेशा उस परिवार से जुड़े हैं जो परिवारवाले उनके होने का अहसास दिलाते हैं। शशांक भी शारीरिक अक्षमता के बावजूद अपने माँ और परिवार के सदस्यों का हौसला बढ़ाता रहता है।

समीक्षक डॉ. टी. विश्वंभरन कहते हैं, ''शशांक और उसकी माँ इन दोनों के साथ पूरा परिवार अपनी तमाम कमजोरियों और खूबियों के साथ आजाद भारत के परिवार, समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं।''१ इस उपन्यास में शशांक के परिवार के साथ-साथ दादी के बचपन का परिवार, आर्थर का, जैक्सन का इनके परिवारों का परिवेश विस्तृत रूप में बताया है।

उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' के तीन मुख्य पात्र हैं के.वी. शंकर अय्यर, गुरुचरण राय, उपमन्यू भट्ट तीनों कारपोरेट इंडिया के नुमाइंदे हैं। के.वी.अय्यर कुटुंब पद्धति में विश्वास रखनेवाला इन्सान है। इनके परिवार में पत्नी एवं एक बेटा है। पत्नी मछली खानेवाली एक बंगला कायस्थ सुंदरी है जिसका ब्राह्मणत्व से दूर-दराज का कोई तार नहीं जुड़ा। लेकिन के.वी. अय्यर शुद्ध शाकाहारी रोज इडली, डोसा, रसम, तैइर-सादम (दही-चावल) खानेवाले दक्षिण भारत के अय्यर ब्राह्मण हैं। इन्होंने अपना परिवार बनाने के खातिर अपने जन्मदाता पिता के परिवारों से दुश्मनी मोल ली थी। कारण ''के.वी. को पता था कि अगर उनकी पत्नी भारत के दूसरे ताकतवर और नामी ब्राह्मण कुल की होती-जैसे कि चितपावन ब्राह्मण, कुमायूँनी ब्राह्मण या कश्मीरी ब्राह्मण तो पिता को इतना दुख नहीं होता लेकिन ब्राह्मणत्व की लकीर पीटने वाले पिता इस बात को समझ नहीं सकते कि प्रेम भी कुछ होता है या कि प्रेम जाति और कुल देखकर नहीं होता।''[१]

इन विचारों से स्पष्ट होता है कि के.वी.परिवार बनाने-निभाने में विश्वास रखनेवाले चरित्र हैं। अलका ने के.वी. पुरुष चरित्र द्वारा संयुक्त परिवार का महत्व समझाया है। दूसरे चरित्र भट्ट के परिवार में पिता, पत्नी, छोटा बेटा, फिर भी नौकरियाँ छोड़ते-पकड़ते शहर-शहर, घूमने-भटकने में समय, जीवन व्यतीत करनेवाला पिता से मोह द्रोह करते दिखता है। तीसरा गुरुचरण राय कम्पनी का काम करते न करते जगह-जगह भटकने वाला किसी भी स्त्री के प्रेम में पड़कर आगे बढ़ जानेवाला सो कॉल 'लवगुरु' है। मस्तमौला गुरु के आगे-पीछे कोई परिवार नहीं, अर्थात् परिवार क्या होता है उसे पता नहीं। लेकिन तीनों का एक परिवार है, 'इंडिया कारपोरेट की दुनिया।' इन तीन पुरुष पात्रों द्वारा लेखिका ने संयुक्त, एकल, परिवारहीन व्यक्तियों में अंतर बताया है।

इस प्रकार लेखिका ने अपने पहले से चौथे उपन्यास तक अपने स्त्री-पुरुष चरित्रों द्वारा संयुक्त एकल परिवारों के सुख-दुख, नफा-नुकसान लिखा है। इन पात्रों में अलका के विचार तो हैं ही कहीं-कहीं बतौर लेखिका भी अपने विचार देती है। जो विशेषकर सिर्फ संयुक्त परिवार का महत्व बताते हैं। इन्सान को इन्सानियत से जोड़ना सिखाते हैं। बाकी बात रही जो उत्तर आधुनिकता के कारण विचारों में ही भिन्नता आ रही है इसलिए विभक्त/एकल परिवार आज बन रहे हैं।

ग्रंथ सूची

1.नई कहानी की भूमिका – कमलेश्वर, शब्द प्रकाशन दिल्ली 1978
2.साठोत्तरी हिन्दी कहानी – डॉ. विजय द्विवेदी, प्रभा प्रकाशन, 1984
3.नई कहानी दशा–दिशा और संभावना – श्री सुरेन्द्र, अपोलो पब्लिकेशन, जयपुर 1966
4.अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व एवं सिध्दांत – डॉ. सुदेश बत्रा, अमन प्रकाशन 2000
5.साहित्य व संस्कृति – डॉ. देवराज, पंचकूला प्रकाशन 2001
6.पानी के प्राचीर – रामदरश मिश्र, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी 2000
7.हिन्दी शब्द समूह का विकास – डॉ. नरेन्द्र मिश्र, साहित्य भवन आगरा 2001
8.समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ – डॉ. पुष्पपाल सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली 1986
9.मुहावरा – लोकोक्ति कोश – हरिवंशराय शर्मा, साहित्य भवन 1999
10.आधुनिक पाश्चात्य उपन्यासों में यथार्थवाद – अमरनाथ जौहरी, पंचकुला प्रकाशन

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net